HOPE for HIE
awareness • education • support

HIE से सामान्य निदान

मस्तिष्क पक्षाघात

सेरेब्रल पाल्सी बच्चों में सबसे आम मोटर विकलांगता है। हालाँकि, एचआईई सभी मामलों का केवल 10-15% ही होता है।

सीपी शरीर की किसी भी मांसपेशी को प्रभावित कर सकता है, जिससे संभावित रूप से गति, वाणी और मांसपेशियों की टोन प्रभावित हो सकती है। अध्ययन के अनुसार, सीपी एचआईई से पीड़ित लगभग 40% बच्चों को अलग-अलग स्तरों पर प्रभावित करता है।

निदान की समयरेखा: सेरेब्रल पाल्सी का निदान आमतौर पर पहले दो वर्षों के भीतर किया जाता है, और अधिक हल्के सीपी का निदान 10 वर्ष की आयु तक किया जाता है।

मिरगी

मिर्गी विभिन्न प्रकार के दौरे संबंधी विकारों का एक समूह है। मिर्गी सभी HIE "स्तरों" पर, सभी HIE मामलों के 50-60% से अधिक मामलों को प्रभावित करती है। HIE नवजात शिशुओं में दौरे और कई दुर्लभ मिर्गियों का एक प्रमुख कारण है।

दौरे कई प्रकार के होते हैं और उन्हें नियंत्रित करने के लिए चिकित्सा और शल्य चिकित्सा के विकल्प भी उपलब्ध हैं। नवजात शिशुओं में दौरे एचआईई के साथ आम हैं, और ये मिर्गी में बदल भी सकते हैं और नहीं भी।

निदान की समय-सीमा: मिर्गी किसी भी समय प्रकट हो सकती है, लेकिन यह या तो नवजात शिशुओं में दौरे के कारण उत्पन्न होती है, या 4, 6, 8 वर्ष की आयु में तथा युवावस्था में प्रमुख विकासात्मक परिवर्तनों के दौरान प्रकट होती है।

माध्यमिक माइक्रोसेफली

एचआईई से पीड़ित कई बच्चों में सेकेंडरी माइक्रोसेफली का निदान किया जाता है। यह जन्मजात माइक्रोसेफली जैसा नहीं है और इसका सीधा सा मतलब है "छोटा सिर", क्योंकि इसमें होने वाली क्षति मस्तिष्क के विकास को बाधित करती है।

इसका प्राथमिक, जन्मजात माइक्रोसेफेली की तरह संज्ञान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निदान की समयरेखा: माध्यमिक माइक्रोसेफली का आमतौर पर पहले वर्ष के भीतर निदान किया जाता है, क्योंकि चोट के बाद मस्तिष्क के विकास पर गहन निगरानी रखी जाती है और उसे मापा जाता है।

सीखने और ध्यान संबंधी समस्याएं

सीखने की अक्षमताएँ और अंतर, कार्यकारी कार्यप्रणाली, प्रसंस्करण और ध्यान संबंधी समस्याएँ, जैसे एडीएचडी, डिस्लेक्सिया, डिस्ग्राफिया, डिस्कैलकुलिया, आदि, एचआईई से पीड़ित बच्चों में आम हैं, और सामान्य आबादी की तुलना में इनकी आवृत्ति अधिक होती है। कई बच्चे, जिन पर शारीरिक प्रभाव नहीं पड़ता, अंततः सीखने और ध्यान संबंधी समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं। छात्रों को यह सीखने में मदद करने के लिए कई रणनीतियाँ और उपाय उपलब्ध हैं कि उनका मस्तिष्क कैसे सर्वोत्तम ढंग से काम करता है।

निदान की समयरेखा: सीखने और ध्यान संबंधी समस्याएं 3-5 वर्ष की आयु के बीच दिखाई दे सकती हैं, लेकिन अधिकांश का निदान 5-8 वर्ष की आयु के बीच किया जाता है।

आत्मकेंद्रित

यह देखा गया है कि एचआईई से पीड़ित बच्चों में ऑटिज़्म ज़्यादा पाया जाता है। यह बताना मुश्किल है कि क्या ऑटिज़्म जैसे लक्षण/लक्षण ही निदान की ओर ले जाते हैं, या क्या यह वास्तव में ऑटिज़्म का निदान है।

निदान की समयरेखा: गंभीरता के आधार पर, एचआईई के साथ ऑटिज़्म का निदान 18 महीने और 5 साल की उम्र के बीच किया जा सकता है, कुछ निदान बाद में शुरुआती किशोरावस्था में आते हैं।

व्यवहार संबंधी चुनौतियाँ

मस्तिष्क की चोटों से व्यवहारिक प्रतिक्रियाएँ और भी बढ़ जाती हैं। कभी-कभी यह ललाट लोब की क्षति से संबंधित होता है, तो कभी संवेदी प्रसंस्करण संबंधी कठिनाइयों के कारण।

निदान की समय-सीमा: शुरुआत में यह पता लगाना मुश्किल होता है कि सामान्य व्यवहार क्या हो सकता है। एचआईई के कारण होने वाली कई व्यवहारिक और संवेदी समस्याओं का निदान 2-5 वर्ष की आयु के बीच, और कभी-कभी 7-10 वर्ष की आयु के बीच, ललाट लोब के विकास के कारण होता है।

सुनने संबंधी समस्याएं

संवेदी श्रवण हानि, प्रगतिशील श्रवण हानि, श्रवण प्रसंस्करण अंतर और विकलांगताएं, और अन्य श्रवण संबंधी समस्याएं एच.आई.ई. के साथ आम हैं।

कुछ बच्चों को स्कूल में श्रवण यंत्र, कर्णावर्त प्रत्यारोपण या श्रवण प्रवर्धन उपकरणों से लाभ हो सकता है।

निदान की समय-सीमा: कुछ शिशु एनआईसीयू और अस्पताल में अपने प्रारंभिक श्रवण परीक्षण में सफल नहीं हो पाते। अन्य शिशुओं का निदान पहले दो वर्षों के भीतर, आमतौर पर निर्धारित श्रवण परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है।

दृष्टि संबंधी मुद्दे

एचआईई कुछ दृष्टि संबंधी चुनौतियां पैदा कर सकता है, जैसे विलंबित दृश्य परिपक्वता, कॉर्टिकल दृष्टि क्षीणता, विभिन्न प्रकार के स्ट्रैबिस्मस, ये सभी बहुत आम हैं।

दृष्टि संबंधी समस्याओं की शीघ्र पहचान से अधिक कार्यात्मक दृष्टि विकसित करने में मदद मिल सकती है, आदर्श रूप से स्कूलों में बाल चिकित्सा नेत्र विज्ञान, ऑप्टोमेट्री और कम दृष्टि विशेषज्ञों की एक बहु-विषयक टीम के साथ।

निदान की समय-सीमा: पहले कुछ महीनों और दो वर्षों के भीतर प्रारंभिक दृष्टि मूल्यांकन से आमतौर पर अधिकांश दृष्टि समस्याओं की पहचान हो जाती है।

गुर्दे की समस्याएं

किडनी की समस्याएँ एचआईई से पीड़ित बच्चों को एनआईसीयू/पीआईसीयू में तीव्र रूप से प्रभावित कर सकती हैं और उनके कामकाज पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकती हैं, कभी-कभी दवाओं और यहाँ तक कि प्रत्यारोपण की भी आवश्यकता पड़ सकती है। कई बच्चे जो क्षणिक किडनी की समस्याओं का अनुभव करते हैं, उनमें सौम्य सिस्ट विकसित हो सकते हैं। एचआईई से पीड़ित 40% से अधिक शिशुओं को तीव्र किडनी क्षति (एकेआई) प्रभावित करती है। दीर्घकालिक क्रोनिक किडनी रोग 20% तक प्रभावित करेगा, जिसकी गंभीरता अलग-अलग हो सकती है।

निदान की समय-सीमा: AKI का निदान आमतौर पर चोट के बाद NICU या PICU में किया जाता है, तथा दीर्घकालिक किडनी प्रभावों का निदान अनुवर्ती के पहले कुछ वर्षों में किया जा सकता है।

खिलाना और निगलना

एचआईई (HIE) भोजन करने, निगलने और जठरांत्र प्रणाली को प्रभावित कर सकता है, जिसके लिए कभी-कभी अस्थायी या स्थायी फीडिंग ट्यूब की आवश्यकता होती है—इस स्थिति को डिस्फेजिया (dysphagia) कहा जाता है। एचआईई (HIE) से ग्रस्त शिशुओं में अक्सर चूसने, निगलने और गैग रिफ्लेक्स (उल्टी करने की क्रिया) की क्षमता कम हो जाती है। कुछ ठीक हो जाते हैं और सुरक्षित रूप से मुँह से खा सकते हैं, जबकि अन्य को उचित पोषण के लिए फीडिंग ट्यूब की आवश्यकता हो सकती है। मांसपेशियों की कमज़ोर टोन (हाइपोटोनिया) और लंबे समय तक एनजी ट्यूब का उपयोग भी एसिड रिफ्लक्स में योगदान दे सकता है।

निदान की समय-सीमा: आमतौर पर पहले दिनों से लेकर हफ्तों तक या पहले दो वर्षों में इसका निदान हो जाता है।